REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

सल्तनतकालीन शिल्प कृतियाँ

डॉ.मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.

❊ प्रस्तावना :

सल्तनत समय में गुजरात में अनेक प्रकार के शिल्प स्थापत्यो की रचना हुई थी। जिसमें इस समय दरम्यान अभापुर का शिवशकित मंदिर, वडनगर के हाटकेश्वर मंदिर में मत्स्यावतार विष्णु का शिल्प तथा किशनगढ (जि.बनासकांठा) पोलोमां आये हुए मंदिर के छत का नागदमन का शिल्प और पोलो में आया हुआ सारणेश्वर मंदिर में से चतुर्भुज रक्त चामुंडा की मूर्ति मीली हुई है। जो १५वीं सदी दरम्यान बना हुआ जानने को मिलता है।

❊ सल्तनत कालीन शिल्प कृतियाँ :

अभापुर के शिवशक्ति के मंदिर में एक स्तंभ पर चतुर्भज त्रिनेत्रधारी शिव की खडी मूर्ति नोंधपात्र है। उनके मस्तक पर करंड मुकुट है। नीचे के बाये हाथ पे पकडे गए पत्र पर वमणा नीचले हाथ द्वारा शिव लिख रहे है। देव के दाये पाँव के पास उनके वाहन नंदि की छोटी आकृति रखी है। पत्र लिखते शिव का यह शिल्प गुजरात में और शायद भारतभर में विरल है।

वडनगर के हाटकेश्वर मंदिर में मत्स्यावतार विष्णु का शिल्प है। वह इसके शास्त्रीय प्रतिमा-विधान का अच्छा नमूना पूरा करती है। इसमें जंधा तक का भाग मनुष्यकार और उसके नीचे का भाग मत्स्याकार बनाया है। चार हाथो वाले देव के उपले दाये हाथ में गदा और बाये हाथ में चक्र है। जबकि नीचे का दाया हाथ शंखयुक्त वरद मुद्रा में और बाया हाथ पद्मयुक्त वरद मुद्रा में है। देव का मनुष्यदेह विष्णु के सभी अलंकारो से और किरीट-मुकुट सेय सुशोभित है। विष्णु ने नीचे शंखयुक्त हाथ द्वारा नीचे हाथ जोडकर बेठे हुए भक्त को स्पर्श किया है।

किशनगढ (जि.साबरकांठा) में आये हुए एक छोटे मंदिर की छत में संभवत १५मी सदी का नागदमन का शिल्प अंकित हुआ है। उसके मध्य भाग में चार हाथवाले को कृष्ण नाग की पीठ पर सवार हुए देखने के मिलते है। नाग का उत्तमांग मनुष्य का है। उसका लंबा सर्पपुच्छ कृष्ण और नाग को मध्य में रखकर उनके फिरते ग्रंथियुक्त सुंदर आर्वतन रचा है। कृष्ण और नागकी चारोओर और नाग के आवर्तन अपने सर्पाकार अंगो से मनोहर रुप से गुंथाइ हुई आठ नागीन भी उत्तमंग मानव का लगता है। नाग और नागणी ने हाथ जोडे हुए है। पूरा दृश्य कलात्मक और रम्य लगता है।

पोलो विस्तार के अभापुर का शिवशक्ति मंदिर में से मिले हुए स्तंभो पर सप्त मातृकाओ में से ब्रह्मी और वैष्णवी के मूर्तिशिल्प नोंधपात्र है। ब्राह्मी के बाये उपरी हाथ में पुस्तक और नीचले हाथ में कमंडल है। जबकी दाये उपला हाथ खंडित है, जिसमें सूत्र धारण किया हुआ है। नीचला हाथ वरद मुद्रा में है। वैष्णवी के चार हाथो में से तीन खंडित है। नीचला दाया हाथ पद्मयुक्त वरद मुद्रा में है। जबकी दाये हाथ में अस्पष्ट, बाये उपले हाथ में गदा और नीचले हाथ में शंख होने को देखने को मिलता है। ब्राह्मी और वैष्णवी दोनो ने करंडयुक्त धारण किया है। वैष्णवी के भाल में बिंदी देखने को मिलता है। दोनो के नेत्र विस्फारित है। वैष्णवी ने कान में रत्नकुंडल धारण किया है। दोनो ने अनेक सेर के हार बाजुबंध वलय कटिबंध कटिमेखला और नूपुर धारण किया है। इसमें ब्राह्मी के अलंकारो का वैविध्य और रुपांकन मनोहर है। दोनो ने अधोवस्त्र धारण किया है और जंघा पर प्रचलित पद्धति के मुताबिक दुपट्टा बांधा है। ब्राह्मी की बाई साइड पर हाथी, मोर, वानर आदि और वैष्णवी की दायी साइड पर सिंहव्याल आदि रुपांकन किये है।

पोलो विस्तार में आये हुए सारणेश्वर मंदिर में से चतुर्भुज रक्त चामुडा की मूर्ति मीली हुई है। देवी ने उपले दाये हाथ में वज्र और नीचले बाये हाथ में खट्वांग धारण किये है। उपले बाये हाथ द्वारा रक्तपात्र पकडा है और नीचे के दाय हाथ द्वारा वह मांस का टूकडा खाते है। देवी न जटामुकुट बाजुबंध वलय, पग के लंबे मुंडमाला धारण किये है। अधोवस्त्र भी पहना हुआ देखने को मिलता है। देवी के पेट पर गहरा खड्डा पडा है । पग के पीछे शब पडा हुआ है। बायी तरफ नीचे के भाग में जटामुकुट धारण की हुई एक स्त्री हाथ जोडकर खडी है।

वडनगर के हाटेश्वर महादेव के दक्षिण दिशा के दिक्पाल यमराज का सुंदर शिल्प देखने को मिलता है। चतुर्भज देव के उपले दाये हाथ में गदा और बाये हाथ में कुफ़कुट है, जबकि नीचले दाये हाथ में लिखित और बाये हाथ में पुस्तक है। देव के नेत्र प्रदीप्त अग्नि जैसे है। उनके माथे पर किरीटमुकुट और शरीर पर अलकारो की सुंदर सजावट है। उनके पास वाहन महिषी खडा है। 'रुपावतार' और रुपमंडन' नामक शिल्पग्रंथ अनुसार का यह प्रतिमाविधान जानने को मिलता है। फर्क सिफ इतना ही है कि यहाँ दंड के बदले गदा धारण की हुई देखने को मिलती है।

अजितनाथ की दूसरी एक प्रतिमा तारंगा की टेकरी पे आये हुए अजितनाथ मंदिर के मूलनायक नाम से प्रतिष्ठित है। वि.स.१४७९ (इ.स.१४२२-२३) में प्रतिष्ठित हुई इस प्रतिमा में तीर्थंकर योगासन में बेठे हुए है। उनके आसन की पीठ में उनके गज-लांछन कंडारा है। उनका मस्तक बाल के गुच्छो से सुशोभित है। उनके कान की बूट स्कंध को स्पर्श करती है। छाती पर श्रीवत्स का चिन्ह है। फोरता पंचतीर्थ परिकर है, जिसमें उनकी दोनो तरफ एक एक कार्योत्सर्ग जिनप्रतिमा और उन दोनो के उपर एक एक बेठी हुई जिन-प्रतिमा कंडारी है। मूलनायक जी के मस्तक क उपर के भाग में दो बाजु पर एक एक मालधार उनके उपर के भाग के हाथी और नर्तकी की आकृतियाँ और परिकर के उपर मध्य में अंजलि मुद्रा में भक्त की आकृति कंडारो हुई है।

पोलो में अभापुर में आया हुआ शिवशक्ति मंदिर के स्तभों पर स्त्रीओ के ज्यादातर शृंगार करते हुए मनोहर मूर्तिशिल्प कंडारा है। एक स्त्री बाये हाथ से बालो में से पानी निकालती हुई देखने को मिलती है। उनके बाये हाथ-पग खंडित है। उनके शरीर पर कोई वस्त्र या अलंकार देखने को मिलते नहीं। उनकी बायी तरफ कोइ पक्षी बाल में से टपकता पानी पीते हो इसी तरह उंची डोक किया हुआ दिखता है। त्रिभंग में खडी हुई दूसरी स्त्री वस्त्र और शणगार सजाकर बाये हाथ में हुए दर्पण में अपना प्रतिबिंब नीरख रही है। दाया हाथ मस्तक पर रखा हुआ है। उनके बाये हाथ पर से पसार किये हुए दुपट्टे अच्छे तरीके से कंडारे है। तोसरी स्त्री के मस्तक पर विशिष्ट प्रकार के केशकलाप गूंथे है। बाये हाथ में रखे हुए पत्र पर दाये हाथ द्वारा लेखीनी से लीखे रहे इस पत्रलख के मुख पर के भाव और उंगलीयों की छटा रम्य है। विणावादन करती हुई चोथी स्त्री का वस्त्रपरिधान पत्रलेख को मिलता जुलता है लेकिन केशगुंफन, भाल पर की बिंदी, रत्नकंकण, पग के संकल आदि शृंगार की बाबत में अलग लगती है। इस मंदिर की सभी मनष्याकृतिओ के नेत्र विस्फारित किये हुए होने से इस वस्त्रो से भी इस प्रकार के नेत्र स्वाभाविक लगते है। सद्यस्नाता के अलावा की तीनो स्त्रीयो के कान में, कान से लगभग तीन गुना बडे कद के कुंडल देखने को मिलते है जो विशिष्ट है।

इडर से पाँच माइल दूर आयी हुई लीभोइ गाँव नजदीक के कणानाथ महादेव के मंदिर की जालिया, खेडब्रह्मा गाँव के ब्रह्मा जी के मंदिर के गढमंडप की शृंगारचोकी की जालीया, विजयनगर के जंगल में आये हुए लाखेणा जैन मंदिर की जालीया आदि नीरखने से इस काल के हिंदु तथा जैन जाली काम का ख्याल आ शकता है। गिरनार पर १५ वीं सदी में बनाया हुआ संप्रति राजा के मंदिर के रंगमंडप की दक्षिण की तरफ ९ दो-तीन हारवाले और ६३ खंडयुक्त मंडप के गवाक्ष और नवचोकी के दिवालो के अच्छे जालीकाम में ग्रास पट्टी और हंसक्रीडा बीच के भाग में खंड पाडी उसमें भौतिक आकतियाँ उपरांत वैविध्यपूर्ण कलात्मक और मनोहर बना है।

❊ संदर्भ सूचि :

१. थोमस परमार और जयकुमार शुक्ल, 'चंद्रक विजेता निबंध-१९८८', गुजरात इतिहास परिषद, अहमदाबाद, १९८९

२. आर.टी.सावलिया, 'गुजरात की शिल्पकला में कीचक', गुजरात के इतिहास परिषद का २१ वाँ अधिवेशन, कोटा (राजस्थान), २००१ मुकाम 'श्रीमती सरयूवसंत गुप्त रौप्य चंद्रक', विजेता शोधनिबंध (अप्रगट)

३. ब्रह्मक्षत्रिय मकुंदभाइ, 'मेरा गाम पाटण', पाटण

४. परीख रसिकलाल और शास्त्री हरिप्रसाद गं., ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-५, सल्तनतकाल, शेठश्री भो.जे.विद्याभवन, अहमदाबाद

५. परीख रसीकलाल और शास्त्री हरिप्रसाद गं., ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-६, सल्तनतकाल, शेठश्री भो.जे.विद्याभवन, अहमदाबाद

७. शास्त्री हरिप्रसाद गं., ''गुजरात का प्राचीन इतिहास'', युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद

डॉ.मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.